भारिया जनजाति की वर्तमान सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति एवं विकास पर प्रभाव

म.प्र.के छिंदवाड़ा जिले में स्थित पातालकोट क्षेत्र के विशेष संदर्भ में

ताजबी कुरैषी*

* पीएच.डी. शोधार्थी, समाजषास्त्र, डॉ. बी आर आम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विष्वविद्यालय, डॉ. आम्बेडकर नगर, (महू) इन्दौर, म.प्र.।

सारांश :– प्रस्तुत षोधपत्र का प्रमुख उद्देष्य भारिया जनजति की वर्तमान सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना हैं। प्रस्तुत षोध पत्र में मध्यप्रदेष के छिन्दवाड़ा जिले की तहसील तामिया क्षेत्र में स्थित पातालकोट क्षेत्र के समस्त 12 आबाद ग्रामों का अध्ययन ग्रामवार जनगणना विधि के द्वारा कुल 503 परिवारों का अध्ययन किया गया है। वर्तमान समय में भारिया जनजाति के लोग अपने अधिकारो के प्रति जागरूक हो रहे है पूर्व की तुलना में इनके जीवन स्तर में सुधार हुआ है लेकिन अभि भी ये लोग अर्थिक रूप से पिछड़े है एवं विकास की मुख्य धारा से बहुत दूर हैं। इनमें षिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ी है। बाहरी लोगों से सम्पर्क होने से इनके रहन–सहन, बोलचाल, खानपान, पहनावें में परिवर्तन स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। वर्तमान समय मे भारिया परिवारों के सदस्यों में सरकारी नौकरी के प्रति रूझान बढ़ा है, बच्चे षिक्षा प्राप्त कर सरकारी नौकरी में पदस्थ हो रहे है। सीमित परिवारों की लोकप्रियता बढ़ रही है। संचार के साधनों जैसे मोबाइल, मोटर सायकल का उपयोग अधिक होने लगा है। बाहरी दुनिया के सम्पर्क के कारण अब इनकी सामाजिक संरचना में काफी बदलाव देखने को मिल रहा है। प्रस्तुत शोध में भारिया जनजाति की वर्तमान सामाजिक पृष्टभूमि को उजागर करने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तावना :– वर्तमान मानव समाज विकासोउन्मुखी है। उदारीकरण, नीजिकरण, भूमण्लीकरण आदि के कारण मनुष्य दिन–प्रदिन अपने सत्त्व से अनजाने ही वंचित होता जा रहा है इस गतिषीलता प्रवाह में एक ऐसा भी समाज है जो अपने सत्त्व को स्थापित रखना चाहता है वह है जनजतीय समाज। गतिषील समय में स्थिर जनजतीय समाज अपनी आस्था, भाषा, कलारूचि, रूढ़ियां, गीत, नृत्य और सभी अतीतमुखी सांस्कृतिक बनावटों से अलंकृत है। आज भारत आर्थिक विकास के पथ पर तेज गति से आगे बढ़ता जा रहा है भारत के हर हिस्से और हर वर्ग के चेहरे पर विकास की झलक देखी जा सकती है इस सबके बावजूद आज भी समाज का एक वर्ग ऐसा है जो हजारों साल पुरानी अपनी परम्परा के साथ जी रहा है। भारत के आदिवासी आज भी जगंली जीवन–यापन कर रहे है। इनकी संख्या काफी हैं लेकिन विकास की बयार उन तक नही पहुंच पा रही है।

योजना आयोग के पाचँवी पंचवर्षीय योजना(1974–1979) की सूची में प्रथम बार 52 विषेष पिछड़ी जनजाति के नाम सूचीबद्ध किये गये। इस योजना के कियान्वयन पष्चात् छटवी पंचवर्षीय योजना (1980–1985) में 20 और नवीन नाम सम्मिलित किये गये। इसके बाद सातवी पंचवर्षीय योजना (1985–1990) में 02 नाम और जोड़े गये तथा ग्यारवीं पंचवर्षीय योजना (2007–2012) में 01 नाम और सूचीवद्ध किया गया। कुल इस प्रकार भारत के कुल 2011 की जनगणना तक 75 विषेष पिछड़ी जनजातियाँ सूचीबद्ध की गयी है।

भारत की कुल जनसंख्या जनजाति 8.63 प्रतिषत है तथा मध्यप्रदेष की कुल जन संख्या में अनुसूचित जनजाति 21.8 प्रतिषत है और इस जनसंख्या में पिछड़ी जनजातियों की जनसंख्या 7.98 प्रतिषत है, इस प्रकार अब मध्य प्रदेष में कुल 43 जनजातियाँ शेष है जिनमें से तीन बैगा, भारिया, सहरिया विषिष्ट कमजोर जनजातीय समूह (पी.वी.टी.जी.) घोषित है इनमें से भारिया जनजाति ग्रामीण क्षेत्रो में 15.64 प्रतिषत तथा नगरीय क्षेत्रो में 19.23 प्रतिषत जनसंख्या निवास करती है (जनगणना 2011) विभिन्न शोध अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि भारतीय जनजातियों में पिछले दो दषकों से बहुत बड़ा परिवर्तन देखने को मिला है जैसे संचार के साधन, आवागमन के साधन, औद्योगीकरण, षिक्षा एवं योजनाबद्ध कार्यक्रमों के कारण कभी जंगलों और पहाड़ों में रहने वाले ये आदिवासी जो सभ्यता के सम्पर्क से कटे हुए थे आज संचार श्रृंखला में बंध जाने से सभ्य समाज के निकट आ गए हैं। षिक्षा के प्रसार ने जनजातीय लोगों को विभिन्न पदो पर नौकरियां प्रदान की है। वर्ष 2015–16 में भारिया परिवार का सर्वेक्षण किया गया जिसके अनुसार भारिया परिवारों की संख्या 607 एवं पातालकोट की कुल भारिया जनजाति की जनसंख्या 3038 है इसमें महिला 1497 एवं पुरूष 1541 है, जो भारिया परिवारों की जनसंख्या में वृद्धि दर्शाता है।

शोध समस्या का चयन :– प्रस्तुत शोध मध्यप्रदेश की विशेष पिछड़ी जनजातीय समूह जिसके अन्तर्गत सहरिया, बैगा, भारिया जनजाति समूह आते है, इन समूह में से भारिया जनजाति के पूर्व अध्ययन बताते है कि भारिया अपनी विशिष्ट सामाजिक परिस्थितिकीय स्थितियों के कारण अतिसंरक्षित (Most vulnerable group) है। यह जनजाति दुर्गम स्थान में निवासरत् होने के कारण अन्य समुदाय से सम्पर्क ज्यादा नहीं हो पाता है। विकास नीति के बावजूद भी यह जनजाति सामाजिक एवं आर्थिक रूप से कमजोर है। भारिया जनजातियों के सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति एवं विकास के प्रभावो का अध्ययन करना है, जिससे भारिया जनजाति की सामाजिक व आर्थिक स्थिति को समझने एवं इनके विकास में आ रही समस्याओं को समझकर समाधान प्रस्तुत करने हेतु शोध समस्या का चयन किया गया है।

अध्ययन के उद्देष्य :–

1. भारिया जनजातियों की वर्तमान आर्थिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।

अध्ययन की शोध प्रविधि :–

शोध प्ररचना :– प्रस्तुत शोध अध्ययन में सामाजिक शोध उद्देष्य की प्रकृति को देखते हुये वर्णनात्मक शोध प्ररचना का उपयोग किया गया है।

अध्ययन का क्षेत्र :– प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र हेतु मध्यप्रदेष के छिन्दवाड़ा जिले के तामिया तहसील में स्थित पातालकोट क्षेत्र को अध्ययन क्षेत्र के रूप में सम्मिलित किया गया है।

अध्ययन का समग्र :– प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र में निवासरत् भारिया जनजाति के समस्त परिवारों को अध्ययन के समग्र के रूप में सम्मिलित किया गया है।

अध्ययन की इकाई :– प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र में निवासरत् भारिया जनजातीय परिवार अध्ययन की एक इकाई के रूप में सम्मिलित किया गया है

निदर्षन विधिः– प्रस्तुत षोध में मध्यप्रदेष के छिन्दवाड़ा जिले की तहसील तामिया क्षेत्र में स्थित पातालकोट क्षेत्र के समस्त 12 आबाद ग्रामों का अध्ययन नृजातिय पद्धति के द्वारा किया गया है, इसके साथ ही 12 ग्रामों के समस्त परिवारों के कुल 503 परिवारों का ग्रामवार जनगणना विधि के द्वारा अध्ययन किया गया है।

तथ्यों का संकलन :– प्रस्तुत अध्ययन हेतु प्राथमिक तथा द्वितीयक आंकड़ो का संग्रहण किया गया तथा उनका विष्लेषण करके निष्कर्ष प्राप्त किये गये।

तथ्यों का विष्लेषण :– अध्ययन क्षेत्र में स्थित पातालकोट क्षेत्र के समस्त 12 आबाद ग्रामों के समस्त 503 परिवारों का साक्षात्कार अनुसूची द्वारा प्राथमिक तथ्यों का संकलन किया गया है। संग्रहित तथ्यों को एस.पी.एस.सॉफ्टवेयर का प्रयोग करते हुऐ तथ्यों का सारणीयन एवं सांख्यिकी विष्लेषण किया गया है।

तालिका क्र.1

भारिया जनजाति के उत्तरदाताओं के लिंगानुपात संबंधी विवरण

क्र.	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	पुरूष	445	88.8
2	महिला	58	11.2
	कुल योग	503	100

उपरोक्त तालिका में लिंगानुपात से संबंधी प्राप्त तथ्यों के विष्लेषण से ज्ञात होता है कि अध्ययनित क्षेत्र में सर्वाधिक 88.8 प्रतिशत पुरूष उत्तरदाता वही 11.2 प्रतिषत महिला उत्तरदाता पायी

गई। अतः तालिका से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक पुरूष उत्तरदाताओं का प्रतिषत अधिक पाया गया जबकि महिलाओं का कम पाया गया।

तालिका क्र. 2

उत्तरदाताओं के परिवार का मुख्य व्यवसाय संबंधी विवरण

क्र.	परम्परागत् व्यवसाय	आवृत्ति	प्रतिशत
1	कृषि कार्य	196	38.9
2	वनोपज संग्रहण	110	21.8
	योग	306	60.7
	वर्तमान व्यवसाय		
3	कृषि मजदूरी	104	20.7
4	सरकारी नौकरी	52	10.6
5	प्राईवेट नौकरी	35	6.9
6	दुकानदारी	06	1.1
	कुल योग	503	100

उपरोक्त तालिका में परम्परागत् व्यवसाय से संबंधित प्राप्त समंको से ज्ञात होता है कि 38.9 प्रतिषत उत्तरदाता सर्वाधिक कृषि कार्य करते है वही 21.8 प्रतिषत उत्तरदाता आज भी वनोपज संग्रहण का कार्य करते है।

वर्तमान व्यवसाय संबंधी प्राप्त समंको से स्पष्ट होता है 20.7 प्रतिषत उत्तरदाता कृषि मजदूरी, जबकि सबसे कम 1.1 प्रतिषत उत्तरदाता दुकानदारी, 10.6 प्रतिषत उत्तरदाता सरकारी नौकरी करते है वही 6.9 प्रतिषत उत्तरदाता प्राइवेट नौकरी करते है।

तालिका क्र. 3

उत्तरदाताओं की शैक्षणिक स्तर संबंधी जानकारी

क्र.	शैक्षणिक स्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1	अनपढ़	334	66.2
2	प्राथमिक	94	18.7
3	माध्यमिक	56	11.1
4	हाईस्कूल/हायरसेकण्डरी	08	1.6
5	स्नातक/ स्नातकोत्तर	11	2.4
	कुल योग	503	100

उपरोक्त तालिका में षैक्षणिक स्थिति से संबंधित प्राप्त समंको से ज्ञात होता है कि 66.2 प्रतिषत उत्तरदाता अनपढ़ है, 18.7 प्रतिषत उत्तरदाता प्राथमिक स्कूल तक पढ़े है, 11.1 प्रतिषत

उत्तरदाता माध्यमिक स्कूल व 1.6 प्रतिषत उत्तरदाता हाई स्कूल/हायर सेकण्डरी एवं 2.4 प्रतिषत उत्तरदाता स्नातक/स्नातकोत्तर तक षिक्षा प्राप्त किये हुये है। इस प्रकार सर्वाधिक 64 प्रतिषत उत्तरदाता अनपढ़ पाये गये है।

तालिका क्र.4

भारिया उत्तरदाताओं के परिवार की वार्षिक आय

क्र.	वार्षिक आय	आवृत्ति	प्रतिशत
1	5000 से कम	02	0.3
2	5,000–10,000	05	1.0
3	10,000–20,000	23	4.6
4	20,000–40,000	374	74.4
5	40,000 से अधिक	99	19.7
	कुल योग	503	100

उपरोक्त तालिका में परिवार की वार्षिक आय से संबंधित प्राप्त समंकों से ज्ञात होता है कि 5,000 से कम आय वाले उत्तरदाताओं के परिवारों का 0.3 प्रतिषत है, 5,000 से 10,000 वार्षिक आय में 1.0 प्रतिषत है, 10,000 से 20,000 वार्षिक आय में 4.6 प्रतिषत है, 20,000 से 40,000 वार्षिक आय में 74.4 प्रतिषत है एवं 40,000 से अधिक वार्षिक आय में 19.7 प्रतिषत है। इस प्रकार 74.4 प्रतिषत परिवारों की कुल वार्षिक आय 20,000 से 40,000 के बीच में है जो सबसे अधिक है।

तालिका क्र. 5

उत्तरदाताओं के मकान का स्वरूप संबंधी विवरण

क्र.	मकान का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
1	कच्चा	165	32.8
2	पक्का	19	3.8
3	अर्द्ध पक्का	319	63.4
	कुल योग	503	100

उपरोक्त तालिका में मकान के स्वरूप संबंधी प्राप्त समंको से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 63.4 प्रतिषत उत्तरदाता अर्द्धपक्के मकान में निवास करते है वही सबसे कम 3.8 प्रतिषत उत्तरदाताओं के मकान पक्के हैं एवं 32.8 प्रतिषत उत्तदाताओं के मकान कच्चें हैं। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक परिवार अर्द्धपक्के मकान में निवासरत् है

तालिका क्र. 6

पेयजल के स्त्रोत संबंधी विवरण

क्र.	पेयजल के स्त्रोत	आवृत्ति	प्रतिशत
1	घर में नल	26	5.2
2	सार्वजनिक नल	283	56.2
3	हैण्डपम्प	28	5.6
4	झिरीया	166	33
	कुल योग	503	100

उपरोक्त तालिका में पेयजल संबंधी संकलित समंको से स्पष्ट होता है कि 56.2 प्रतिषत परिवार सर्वाधिक कुंआ का पानी पेयजल के रूप में उपयोग करते है वही सबसे कम 5.6 प्रतिषत परिवार हैण्डपम्प के पानी पेयजल के रूप में उपयोग करते है एवं 33 प्रतिषत परिवार झिरीया का पानी पीते है केवल 5.2 प्रतिषत परिवारों के मकान में घर पर नल लगे हुये है जो झिरीया से पाइप लाइन ग्राम रातेड़ में लगाई गई है ।

तालिका क्र. 7

उत्तरदाताओं के मकान में प्रकाष की व्यवस्था संबंधी विवरण

क्र.	प्रकाष की व्यवस्था	आवृत्ति	प्रतिशत
1	विद्युत बल्व	345	68.6
2	चिमनी/लालटेन	87	17.3
3	सौलर लाइट	71	14.1
	कुल योग	503	100

उपरोक्त तालिका में विद्युत व्यवस्था से संबंधित प्राप्त समंको से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 68.6 प्रतिषत उत्तरदाताओं के मकान में विद्युत व्यवस्था उपलब्ध है वही न्युनतम 14.1 प्रतिषत उत्तरदाताओं के मकान में सौलर लाइट का उपयोग करते है एवं 17.3 प्रतिषत उत्तरदाता चिमनी/लालटेन का उपयोग करते है।

तालिका क्र. 8

भारिया परिवारों के पास उपलब्ध भूमि संबंधी विवरण

क्र.	भूमि (हेक्टेयर)	आवृत्ति	प्रतिशत
1	1 हेक्टेयर से कम	45	8.9
2	1–2	216	42.9
3	2–4	118	23.5
4	4–6	111	22.1
5	6–10	13	2.6
	कुल योग	503	100

उपरोक्त तालिका में भूमि की उपलब्धता संबंधी प्राप्त समंको से स्पष्ट होता है कि 42.9 प्रतिषत उत्तरदाता के पास सर्वाधिक 1–2 हेक्टेयर भूमि है वही न्यूनतम 2.6 प्रतिषत उत्तरदाता के पास 6–10 हेक्टेयर भूमि उपलब्ध है, 8.9 प्रतिषत उत्तरदाता के पास 01 हेक्टेयर से कम भूमि उपलब्ध है, 23.5 प्रतिषत उत्तरदाता के पास 2–4 हेक्टेयर भूमि उपलब्ध है, 22.1 प्रतिषत उत्तरदाता के पास 4–6 हेक्टेयर ही भूमि उपलब्ध है। भारिया परिवारों में पिता से पुत्रों को भूमि हस्तांतारित करने से 42.9 प्रतिषत उत्तरदाता के पास केवल 1–2 हेक्टेयर भूमि मात्र रह गई है जिससे भूमि के जोत में कमी आयी हैं।

तालिका क्र. 9

भारिया परिवारों के उत्तरदाताओं के द्वारा फसल बेचने संबंधी विवरण

क्र.	फसल	आवृत्ति	प्रतिशत
1	नजदीकी बाजार	280	55.7
2	साहूकार	10	2.0
3	नही बेचते	213	42.3
	कुल योग	503	100

उपरोक्त तालिका में दिये गये आंकड़ों के विष्लेषण से यह ज्ञात होता है कि अध्ययनित क्षेत्र में सर्वाधिक 55.7 प्रतिशत उत्तरदाता परिवार नजदीकी बाजार में फसल बेचते है वही सबसे कम 2.0 प्रतिषत उत्तरदाता साहूकार को फसल बेचते है एवं 42.3 प्रतिषत उत्तरदाता परिवार कम फसल होने के कारण फसल नही बेच पाते है।

तालिका क्र. 10

कृषि के अतिरिक्त आय के अन्य स्त्रोत संबंधी विवरण

क्र.	आय के अन्य स्त्रोत	आवृत्ति	प्रतिशत
1	वनोपज बेचना	430	85.5
2	झाड़ू बेचना	15	3.0
3	शराब बेचना	05	1.0
4	जड़ी–बूटी बेचना	10	2.0
5	लकड़ियाँ बेचना	43	8.5
	कुल योग	503	100

उपरोक्त तालिका में आय के अन्य स्त्रोत से संबंधित प्राप्त तथ्यो से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 85.5 प्रतिषत उत्तरदाता वनोपज बेच कर आय प्राप्त करते है वही सबसे कम 1.0 प्रतिषत उत्तरदाता महुआ से बनी शराब बेच कर पैसा कमाते है जबकि 3.0 प्रतिषत उत्तरदाता झाड़ू बेचकर कर, 2.0 प्रतिषत जड़ी–बूटी बेचकर एवं 8.5 प्रतिषत उत्तरदाता लकड़ियाँ बेचकर आय के अन्य स्त्रोत के रूप में प्राप्त करते है।

तालिका क्र. 11

उत्तरदाता परिवारो का बाहरी लोगों के साथ सम्पर्क संबंधी विवरण

क्र.	सम्पर्क	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	493	98.0
2	नहीं	10	2.0
	कुल योग	503	100
यदि हाँ तो कारण			
1	बाजार जाने से	174	35.2
2	शहरो में रोजगार	131	26
3	शादी– समारोह	25	5.7
4	सभी	163	33.7
	कुल योग	493	100

उपरोक्त तालिका में बाहरी लोगो के साथ सम्पर्क संबंधी समंको से स्पष्ट होता है 98.0 प्रतिषत उत्तरदाताओं ने बताया कि उनका बाहरी लोगों से सम्पर्क हुआ है जबकि 2.0 प्रतिषत उत्तदाताओं ने बताया कि बाहरी लोगों से सम्पर्क नही हो पाता है।

कुल 493 उत्तरदाताओं ने सम्पर्क के कारणों में सर्वाधिक 35 प्रतिषत उत्तरदाताओं ने बताया कि साप्ताहिक हाट बाजार जाने से बाहरी लोगों से सम्पर्क होता है वही सबसे कम 5.7 प्रतिषत उत्तरदाता शादी–समारोह से, 26 प्रतिषत उत्तरदाता शहरो में रोजगार जाने एवं 32.7 प्रतिषत उत्तरदाता ने बताया कि इन सभी कारणों से उनका बाहरी लोगों से सम्पर्क स्थापित होता है।

तालिका क्र. 12

शासन द्वारा प्रदाय की गई सरकारी नौकरी संबंधी जानकारी

क्र.	सरकारी नौकरी	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	90	17.9
2	नहीं	413	82.1
	कुल योग	503	100
यदि हाँ तो किस पद पर है			
1	चपरासी	47	52.2
2	सिक्योरिटी गार्ड	10	11.4
3	शिक्षक	13	14.4
4	लेखापाल	07	7.7
5	नाकेदार	08	8.8
6	पषु चिकित्सक	03	3.3
7	पटवारी	02	2.2
	कुल योग	90	100

उपरोक्त तालिका में सरकारी नौकरी की उपलब्धता से संबंधित प्राप्त समंको से स्पष्ट होता है कि 17.9 प्रतिषत उत्तरदाताओं को सरकारी नौकरी प्राप्त हुई है जबकि 82.1 प्रतिषत उत्तदाता परिवारों को सरकारी नौकरी का लाभ नही प्राप्त हुयी है।

कुल 90 उत्तरदाताओं ने बताया कि उन्हें भिन्न–भिन्न पदो पर सरकारी नौकरी प्राप्त हुई है उनमें सर्वाधिक 52.2 प्रतिषत उत्तरदाता को चपरासी की नौकरी प्राप्त हुई है वही सबसे कम 2.2 प्रतिषत उत्तरदाता पटवारी के पद पर पदस्थ है, 11.4 प्रतिषत उत्तदाता सिक्योरिटी गार्ड के पद पर, 14.4 प्रतिषत उत्तरदाता षिक्षक के पद पर, 7.7 प्रतिषत उत्तरदाता लेखापाल के पद पर एवं 8.8 प्रतिषत उत्तरदाता नाकेदार के पद पर एवं 3.3 प्रतिषत उत्तरदाता पषु चिकित्सक के पद पर पदस्थ है,

तालिका क्र. 13

जीवन स्तर में सुधार संबंधी विवरण (सन्1990 के पूर्व एवं वर्तमान)

क्र.	विवरण	सन् 1990 के पूर्व		वर्तमान	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
1	बोलचाल,पहनावे में सुधार	29	5.6	88	17.5
2	पोष्टिक भोजन की उपलब्धता	22	4.4	90	17.9
3	रेडिमेट वस्तुओं का उपयोग	93	18.5	299	59.4
4	ये सभी	—	—	11	2.2
5	नही हुआ	359	71.5	15	3
	कुल योग	503	100	503	100

उपरोक्त तालिका में रहन सहन के स्तर से प्राप्त संबंधी समंको से स्पष्ट होता है कि सन् 1990 के पूर्व सर्वाधिक 71.5 प्रतिषत उत्तरदाताओं ने कहा कि उनके जीवन स्तर में किसी भी प्रकार का सुधार नही हुआ था जबकि सबसे कम 5.6 प्रतिषत उत्तरदाता ने बताया कि बोलचाल, पहनावे में सुधार हुआ था 4.4 प्रतिषत उत्तरदाताओं ने बताया पोष्टिक भोजन उपलब्ध में सुधार सरकारी नौकरी से प्राप्तु आय से हुआ था।

वर्तमान समय में सर्वाधिक 59.4 प्रतिषत उत्तरदाता परिवार ने कहा कि रेडीमेट वस्तुओं के उपयोग में वृद्धि हुई है, वही सबसे कम 2.2 प्रतिषत उत्तरदाताओं ने बताया कि इन सभी में जैसे–पहनावा, बोलचाल में सुधार हुआ है एवं रेडीमेट वस्तुओं के उपयोग वृद्धि हुई है 17.5 प्रतिषत ने उत्तरदाताओं ने बताया कि बोलचाल पहनावें में सुधार हुआ है एवं 17.9 प्रतिषत परिवारों को पोष्टिक भोजन उपलब्ध होता है तथा 3 प्रतिषत उत्तरदाताओं ने बताया कि उनके रहन–सहन में किसी भी प्रकार का सुधार नही हुआ हैं।

निष्कर्ष :–

1. भारिया परिवारों के उत्तरदाताओं में सर्वाधिक कृषि मजदूरी व वनोपज संग्रहण के कार्य में संलग्न है कुछ ही परिवार दुकानदारी के अन्तर्गत जैसे किराने की दुकान, जड़ी–बूटी की बिक्री का कार्य करते है। इसके अतिरिक्त 90 पारिवार वर्तमान समय में सरकारी नौकरी में पदस्थ हैं।
2. भारिया परिवारो में सर्वाधिक अनपढ़ पाये गये है, सन् 1990 के पूर्व पातालकोट क्षेत्र में षिक्षा की स्थिति ठीक नही थी इस कारण यहां के लोग षिक्षा प्राप्त नही कर पाये जिसका मुख्य कारण उत्तरदाताओं ने बताया कि गांव के आस–पास स्कूल न होना एवं आर्थिक स्थिति ठीक न होना बताया गया है।
3. परिवारों की कुल वार्षिक आय सर्वाधिक 20,000 से 40,000 के बीच में पायी गई है जो बहुत की कम है, इसका मुख्य कारण है कि इस क्षेत्र के लोग कृषि मजदूरी में अधिक संलग्न है ओर कृषि से इतनी आमदानी नही हो पाती है।
4. अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक उत्तरदाता अर्द्धपक्के मकान में निवासरत् है। केवल 19 मकान पक्के प्रधान मंत्री आवास योजना के तहत बने है। सन् 1990 के पूर्व भारिया परिवारो के मकान मिट्टी व छत घांस–फूंस के बने होते थे, इंदिरा अवास योजना के द्वारा मकान की स्थिति में सुधार हुआ है। किन्तु मकान का स्वरूप आज भी अर्द्धपक्का है।
5. पातालकोट के सभी गावं में पेयजल की समस्या है सर्वाधिक गर्मी के मौसम में कुंआ व झिरीया का पानी में कमी आ जाती है।
6. पातालकोट के गांव हारमऊ, पचगोल ढाना, जड़मादल, दोआरीपाठा, में आज तक विद्युत व्यवस्था उपलब्ध नही हो पायी है। पचगोल ढाना में खम्बे तो लगे है पर विद्युत तार लाइन नही लगी है। इस प्रकार जिस गांव में विद्युत की सुविधा उपलब्ध है किन्तु 24 घण्टें बिजली उपलब्ध वहां नही हो पाती हैं।
7. पातालकोट में आवँला, चिरोजी, हर्रा–बहेरा, महुआ, आम, के वन आज भी बहुतायत में यहां उपलब्ध है जो भारिया परिवारों की अजीविका का प्रमुख्य साधन हैं।
8. साप्ताहिक हाट–बाजार जाने से पातालकोट के लोगों का बाहरी लोगों से ज्यादा सम्पर्क होता रहता है। साप्ताहिक बाजार के रूप में छिंदी, तामिया, देलाखारी, लौटिया आदि गांव की हाट–बाजार से दैनिक उपयोग की वस्तुऐं खरीदते है।
9. वर्तमान समय मे भारिया परिवार के सदस्यों में सरकारी नौकरी के प्रति रूझान बढ़ा है। बच्चे षिक्षा प्राप्त कर सरकारी नौकरी में पदस्थ हो रहे है।
10. सन् 1990 की तुलना में वर्तमान समय में भारिया परिवार के सदस्य रेडीमेट वस्तुओं का उपयोग अधिक करने लगे है। बाहरी लोगों के सम्पर्क में आने से पहनावे में भी परिवर्तन आया है।

सुझाव :–

1. भारिया जनजाति में षिक्षा का स्तर बहुत कम है इस हेतु षिक्षा के प्रति इन्हें जागरूक करने की आवष्यकता है।
2. कृषि तकनीकि मे सुधार हेतु प्रषिक्षण प्रदान करना जिससे तकनीकि रूप से खेती कर सके साथ ही उन्नत बीज, उर्वरकों का प्रयोग कर उत्पादन में वृद्धि कर सकें।
3. मिश्रित फसल पद्धति को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
4. पातालकोट की भौगोलिक स्थिति को देखते हुए वनोपज से संबंधित उद्योगों की स्थापना की जानी चाहिये, जिससे यहां के लोगो को रोजगार अधिक संख्या में रोजगार मिल सके।
5. सिंचाई के साधनों हेतु कूप/तालाबों का निर्माण किया जाना चाहिए।

।। संदर्भ ग्रंथ सूची।।

1. **भालेराव, पं.साहेबराव एवं धारकवाडकर,दीपक (2015)** ''भारतीय जनजातियाँ संरचना एंव विकास,''इषिका पब्लिषिंग हाउस, जयपुर।
2. **त्रिपाटी, मधुसुधन (2015),** ''भारत के आदिवासी,''ओमेगा पब्लिषिंग दरियागंज, जयपुर।
3. **तिवारी, षिवकुमार एवं शर्मा (2009),** "मध्यप्रदेष की जनजातियां समाज एवं व्यवस्था" मध्यप्रदेष,हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल पृ.क्र.3
4. **शर्मा, आनंद कुमार (2008),** "जनजातियों का स्वतंत्रा संघर्ष " पृ.क्र.6
5. Scheduled communities: A social Development profile of Sc/St (Bihar,Jarkhand and w.b)P.1
6. **Chodhari,sarit Kumare(2005)**,Primitive Tribes in Contempory India, P.2
7. **Base line survey**,Bulletin Vol.No.55(October13-March14),Tribal Research and Development Institute,Bhopal,p.61,62